हिन्दुस्तान

लखनऊ • मंगलवार • 25 अगस्त 2015

वातावरण की स्वच्छता सबकी जिम्मेदारी

लखनऊ | प्रमुख संवाददाता

वातावरण को स्वच्छ रखना सभी की जिम्मेदारी है। वायुमंडल में मौजूद धूल व प्रदूषक पदार्थ सूर्य के प्रकाश को परिवर्तित करके या सोखकर धनात्मक या ऋणात्मक ताप पैदा करते हैं। इसका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है। यह बात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के प्रो. सच्चिदानंद त्रिपाठी ने कही। वह बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से वातावरण प्रदूषण विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि वायुमंडल में मौजूद कणों की रासायनिक संरचना, रंग, प्रकृति व आकार पर निर्भर करता है कि वह सूर्य की कितनी ऊर्जा को परिवर्तित करेगा और कितनी सोखेगा। दूसरी ओर वातावरण में मौजूद धूल व अन्य कण बादल बनाने में सहायक होते हैं। बारिश में वायुमंडल में मौजूद काले कण पहाड़ों पर जमी बर्फ पर गिरते हैं, तो कम ऊर्जा का परावर्तन होता है। ऐसे में बर्फ तेजी से पिघलती है। यही नहीं वातावरण में प्रदूषक पदार्थ हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। श्वसन तंत्र व फेफड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ कानून बनाने से प्रदूषण पर नियंत्रण नहीं होगा, बल्कि उसका कड़ाई से पालन कराने की जरूरत है। इस मौके पर संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाजपेई ने एसएस भटनागर पुरस्कार पाने पर उन्हें बधाई दी। कार्यक्रम में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक डा. चन्द्र मोहन नौटियाल, सदस्य डा. नीरू प्रकाश आदि मौजूद थे।

अमर उजाला

IV

मंगलवार । 25 अगस्त 2015

कैलिफोर्निया से सीखें पर्यावरण संरक्षण

लखनऊ (ब्यूरो)। कैलीफोर्निया पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत के शहरों के लिए मॉडल हो सकता है। वहां कानून दिखावे के लिए नहीं है बल्कि उसका पालन भी होता है। यह बात सोमवार को बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोबॉटनी (बीएसआईपी) में आईआईटी कानपुर के प्रो. सच्चिदानंद त्रिपाठी ने कही। वह पर्यावरण संरक्षण विषय पर वह संस्थान में आयोजित राजभाषा कार्यक्रम में बोल रहे थे। एसएस भटनागर अवॉर्ड विजेता प्रो. त्रिपाठी का कहना था कि आंकड़े बताते हैं कि जिस मात्रा में प्रदूषित कणों की उपस्थिति दूसरे देशों में अधिकतम मानी जाती है। भारत के शहरों में कई गुना सांद्रता इन कणों की है। कानपुर जैसे नगरों में तो मनोरा पीक, नैनीताल की तुलना में कई गुना प्रदूषण और इसका 15-20 गुना नकारात्मक प्रभाव जलवायु पर है। यह अच्छा है कि अब हमारे देश में इन कणों का विस्तृत अध्ययन ट्रांसमिशन और स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप जैसे उपकरणों से होने लगा है। इससे सूक्ष्म संरचना पता लग जाती है। कार्यक्रम में बीएसआईपी के निदेशक प्रो. सुनील बाजपेई, डॉ. चंद्रमोहन नौटियाल मौजूद रहे।

बीएसआईपी में कानपुर के वैज्ञानिक प्रो. सच्चिदानंद त्रिपाठी ने दिया सुझाव

दैनिक जागरण

25 अगस्त 2015

पर्यावरण को स्वच्छ रखना हमारी साझी जिम्मेदारी

- वातावरण प्रदूषण विषय पर व्याख्यान

जागरण संवाददाता, लखनऊ : वातावरण को स्वच्छ रखना हमारी साझी जिम्मेदारी है। गांवों में आज भी चूल्हे के कारण घरों में वायु प्रदूषित रहती है, यद्यपि शहरों की रसोई अपेक्षाकृत स्वच्छ हो गई है।

बीरबल साहनी पुरावनस्पतिविज्ञान संस्थान में सोमवार को राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के प्रो.सच्चिदानंद त्रिपाठी ने यह बात कही। वायुमंडल में उपस्थित धूल तथा प्रदूषक पदार्थ सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करके या सोख कर धनात्मक या ऋणात्मक तापन करते हैं। यह उन कणों की रासायनिक संरचना, रंग, प्रकृति तथा आकार पर भी निर्भर करता है कि कितनी ऊर्जा परावर्तित होगी अथवा अवशोषित होगी। यही नहीं, वातावरण में धूल तथा अन्य कणों की उपस्थिति बादल बनने में सहायक होती है। वातावरण की अभिक्रियाओं को जटिल बताते हुए उन्होंने कहा कि काले कणों के वर्षा में गिरने पर, जमी बर्फ कम ऊर्जा का परावर्तन करती है। इसके परिणाम स्वरूप बर्फ अधिक गलती है। कुल मिलाकर हम चाहें या न चाहें, वातावरण के गुण हमारी जलवायु तथा मौसम को प्रभावित करते हैं। प्रदूषक पदार्थ हमारे स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते हैं। श्वसन तंत्र तथा फेफड़ों के बहुत से रोगों के होने या अधिक कष्टकारी होने के पीछे यही पदार्थ हैं। कानपुर जैसे नगरों में तो मनोरा पीक, नैनीताल की तुलना में कई गुना प्रदूषण और इसका 15 से 20 गुना प्रभाव जलवायु पर है। हमारे देश में अब इन कणों का विस्तृत अध्ययन ट्रांसमिशन तथा स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप जैसे उपकरणों से होने लगा है, जिससे उनकी सूक्ष्म संरचना पता लग जाती है। समिति की सदस्य डॉ. नीरू प्रकाश ने धन्यवाद ज्ञापन किया।